पंक्ति के बीच की दूरी 1.5–2 मीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 50 से.मी. रखी जानी चाहिए। गिलोय की खेती करने से पूर्व खेत में अप्रैल–मई माह में 30 X 30 X 30 से.मी. के गढ्ढे खोद लिये जाने चाहिए। गर्मी में ये गड्ढे इसलिए खोदे जाते हैं ताकि यदि भूमि में कोई भूमिगत हानिकारक जीवाणु हो तो वे समाप्त हो सके, तदोपरान्त इनमें से प्रत्येक गड्ढे में 2–3 किलो गोबर की पकी हुई खाद अथवा कम्पोस्ट खाद तथा 500 ग्राम नीम खली डाल दी जाती है। जुलाई माह में जब 2–3 अच्छी बारिश पड़ जायें तथा गड्ढे अच्छे से पानी से संतृप्त हो जायें तो नर्सरी में तैयार किये गये गिलोय के पौधों को इन गड्ढों में स्थानान्तरित कर दिया जाता है। बरसात में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पौधों के पास पानी न एकत्र हो।

**आरोहण की व्यवस्था** – गिलोय एक लता है अतः इसकी सही वृद्धि के लिए आरोहण की व्यवस्था की जाना आवश्यक होता है। इसके लिए यदि विधिवत फेंसिंग की गई हो तो इसकी लतायें फेंसिंग पर चढ़ाई जा सकती है। खेत में अथवा आसपास नीम या अन्य कोई वृक्ष हों तो गिलोय की बेल इन पर भी चढ़ाई जा सकती है, परन्तु यदि ऐसी कोई व्यवस्था न हो तो इसके लिए सही रूप से झाड़ियाँ लगाई जा सकती हैं। सूखे डंठल खड़े किये जा सकते हैं अथवा कांटेदार तारों का मचान बनाया जा सकता है, जिसके ऊपर इसकी लतायें चढ़ सके। वर्षा ऋतु के उपरान्त महीने में एक बार पानी देने की व्यवस्था की जाना वांछित होता है ताकि पौधों की अच्छी बढ़त हो सके। वर्षा ऋतु में गिलोय की लतायें पत्तों से लद जाती हैं परन्तु पतझड़ के समय पत्तियाँ पीली होकर गिरने लगती है तथा अधिकांशतः भूरे रंग की बेल नजर आती हैं। इसी बीच इन पर लगे हरे रंग के फल भी पक कर लाल रंग के हो जाते हैं। जब ऐसी स्थिति आ जाय (शीतकाल के अंत में) तो इनकी बेलों को नीचे का एक फीट ऊँचा भाग छोड़कर काट लिया जाता है। इन कटी हुई बेलों को छोटे–छोटे टुकड़ों में काट करके सुखा लिया जाता है तथा पूर्णतया सूख जाने पर इन्हें बोरियों में भरकर रख दिया जाता है।

**औषधि संग्रहण काल** – गिलोय के तने (काण्ड) का संग्रहण जनवरी से लेकर मार्च तक करना उपयुक्त है। इस समय काण्ड पत्र विहीन हो जाता है तथा औषधीय तत्व अधिक मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसे जमीन से एक फीट ऊपर किसी तेज हथियार अथवा हँसिये से काट कर पूरी बेलों को इकट्ठा कर लिया जाता है। तने को 1–2 इंच के छोटे–छोटे टुकड़ों में काट कर छाया में सुखा लिया जाता है। कटे हुए पौधे के नीचे के भाग से अगले मानसून में पुनः लतायें प्रस्फुटित होती है जिससे अगले वर्ष की फसल तैयार हो जाती है। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है तथा एक बार रोपित कर दिये जाने के उपरान्त कई वर्षों तक लगातार गिलोय की फसल प्राप्त की जा सकती है। इस बीच यदि कुछ पौधे सूख जाय तो उनके स्थान पर नये पौधे रोपित किये जा सकते हैं। बेलों को चढ़ाने हेतु बनाया गया ढॉचा निरन्तर प्रयोग में लिया जा सकता है।

**उपज की प्राप्ति** – विधिवत खेती करने तथा अच्छी फसल आने पर एक हेक्टेयर भूमि से गिलोय के लगभग 8 से 10 क्विंटल सूखे तने प्राप्त होते हैं, जिन्हें 20 से 25 रू. प्रति किलोग्राम के बाजार भाव से विक्रय किया जाए तो लगभग रूपये 25,000/– की प्राप्ति होती है। स्थानीय आयुर्वेदिक दवाई निर्माताओं के साथ–साथ इसे थोक में दिल्ली, कोलकाता तथा मुंबई की मंडियों में बेचा जा सकता है। एक बार रोपण करने के पश्चात् कई वर्षों तक गिलोय की खेती से आय प्राप्त की जा सकती है।


संकलन एवं संपादन :

डॉ. ए. के. पाण्डे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761–2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761–2840627



Amrit Offset # 2413943


# गिलोय

*[Tinospora cordifolia]*

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

डाकघर – आर.एफ.आर.सी, मण्डला रोड

जबलपुर – 482 021 (म.प्र.)

## परिचय -

गिलोय का वानस्पतिक नाम *टिनोस्पोरा कार्डिफोलिया* है। यह मेनीस्पर्मेसी कुल का पौधा है। इसे विभिन्न भाषाओं जैसे– हिंदी में गिलोय, गुर्च, गुड़बेल; गुजराती में–ग्लो; कन्नड़ में – अमरदावली; तेलगू में – तिप्पतिदा, गोधुचि; तमिल में – सिंडिलकोडि इत्यादि नामों से जाना जाता है । गिलोय सम्पूर्ण भारतवर्ष में 1000 मीटर की ऊँचाई तक पायी जाने वाली एक बहुपयोगी लता है । भारत वर्ष के साथ–साथ श्रीलंका तथा म्यांमार के जंगलों में प्राकृतिक रूप से पायी जाने वाली इस बहुवर्षीय लता का काण्ड मांसल होता है जिसकी शाखाओं से अनेक पतले–पतले मूल निकल कर नीचे की ओर लटकते रहते हैं । इसकी लताओं (तना) पर पतली त्वचा (छिलका) होता है जिसे हटाने पर नीचे हरा मांसल भाग दिखता है। इसके पत्ते हृदयाकार, पान के पत्ते की तरह तथा चिकने होते हैं। इसकी लताओं पर मटर के दाने के समान फल लगते हैं जो पहले तो हरे होते हैं परन्तु पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं। यद्यपि वर्षा ऋतु में इस पर भरपूर पत्ते आते हैं परन्तु सर्दियों में इसके अधिकांश पत्ते पीले पड़कर झड़ जाते हैं। औषधीय निर्माण में मुख्यतः इसकी काण्ड अथवा तने का उपयोग किया जाता है । हालांकि इसके पत्ते भी अत्यधिक औषधीय उपयोग की वस्तु है परन्तु अधिकांशतः इसकी बेल का ही सूखे रूप में प्रयोग किया जाता है। वैसे इसको हरी अवस्था में प्रयुक्त करना ज्यादा लाभकारी माना गया है। वैसे तो किसी भी प्रकार की गिलोय औषधीय उपयोग में लायी जाती है परन्तु नीम के पेड़ पर चढ़ी हुई गिलोय की बेल को अन्य पौधों पर चढ़ी हुई गिलोय से उत्तम माना जाता है।

## औषधीय उपयोग -

जहाँ तक गिलोय के औषधीय उपयोग का प्रश्न है तो गिलोय उन कुछ गिने–चुने औषधीय पौधों में से हैं जिन्हें त्रिदोषनाशक होने का गौरव प्राप्त है । ऐसा माना जाता है कि गिलोय मधु अथवा घृत के साथ कफ को, गुड़ के साथ मलबद्धता को, खाण्ड के साथ पित्त को, अरण्डी के तेल के साथ वायु को तथा सोंठ के साथ आमवात को दूर करती है। इसके साथ–साथ यह मलरोधक, रसायन, बलकारक तथा मधुर एवं अग्नि प्रदीपक है । यह हृदय के लिए हितकारी होने के साथ–साथ मधुमेह, रक्तदोष, कामला, खाँसी, कोढ़, खूनी बवासीर, वातरक्त, कण्ड रोग, क्षय रोग, श्वेतप्रदर, गठिया, रक्त विकार, नेत्र रोग आदि को दूर करती है। परम्परागत औषधीय उपयोगों में गिलोय तथा सतावरी का क्वाथ श्वेतप्रदर में; गिलोय तथा ब्राम्ही का उपयोग दिल की धड़कन नियंत्रित करने में; गिलोय, ब्राम्ही तथा शंखपुष्पी का चूर्ण आँवला के साथ रक्तचाप नियंत्रण हेतु प्रयोग किया जाता है। गिलोय एवं अश्वगंधा की जड़ को दूध में पकाकर बंधत्व दूर करने हेतु प्रयुक्त की जाती है। गिलोय में पाये जाने वाले प्रमुख तत्व – ग्लूकोसाइन, गिलोइन, गिलोइनिन, गिलोस्टेरॉल, बरबेरिन, टिनोस्पोरोसाइड एवं टिनोस्पोरिन आदि है। इस प्रकार गिलोय की औषधीय उपयोगिता सर्वविदित है जिसके कृषिकरण को प्रोत्साहित किया जाना मानव स्वास्थ्य के साथ–साथ व्यावसायिक उपयोगिता की दृष्टि से भी काफी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यद्यपि अभी तक अधिकांशतः इसकी प्राप्ति जंगलों से ही होती है परन्तु इसकी औषधीय एवं व्यावसायिक उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इसके कृषिकरण एवं संरक्षण को बढ़ावा दिया जाना समय की आवश्यकता है।

## कृषि तकनीक -

गिलोय एक बहुवर्षीय लता है जिसका प्रत्येक भाग– जड़, पत्ते, फल तथा तना औषधीय उपयोग का है परन्तु व्यावसायिक रूप से इसके तने (बेल) की मांग है जो कि बाजार में (सूखे रूप में) उपलब्ध है । एक बार लगा देने पर यह प्रतिवर्ष (यदि इसका प्रबंधन ठीक प्रकार से किया जाय) फसल देती रहती है । इसकी खेती विशेष रूप से बंजर जमीनों, सूखे क्षेत्रों तथा कृषिवानिकी के साथ सफलतापूर्वक की जा सकती है । जहाँ पर इसकी बेलों के आरोहण के लिए पहले से व्यवस्था मौजूद हो तथा आरोहण व्यवस्था पर अतिरिक्त खर्चे न करना पड़े उन क्षेत्रो में इसकी खेती विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध हो सकती है। इसकी खेती निम्नानुसार की जा सकती है –

**जलवायु** – गिलोय एक ऐसा पौधा (लता) है जो भारतवर्ष में सर्वत्र पाया जाता है। इस दृष्टि से सम्पूर्ण देश की जलवायु इसके लिए उपयुक्त है । हालांकि इसे विभिन्न प्रकार की जलवायु में उगाया जा सकता है। परन्तु इसकी सही वृद्धि के लिए गरम तथा आर्द्र जलवायु ज्यादा उपयुक्त रहती है।

**भूमि** – गिलोय एक अत्यन्त कठोर प्रवृत्ति की लता है जिसे लगभग सभी प्रकार की मिट्टियाँ रेतीली से लेकर काली कपासिया तक में उगाया जा सकता है । वैसे हल्की कपासिया तथा लाल मिट्टियों में यह ज्यादा अच्छी तरह पनपती है। परन्तु भूमि में जीवांश की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए तथा भूमि में जल निकास की भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए।

**बिजाई की विधि** – गिलोय की बिजाई इसके बीजों एवं कलम (कटिंग्स) द्वारा की जा सकती है। वैसे व्यावसायिक खेती की दृष्टि से कलम का उपयोग किया जाना ज्यादा अच्छा रहता है क्योंकि इससे पौधा तेजी से बढ़ता है, उत्पादन भी ज्यादा होता है। इस कार्य हेतु पुरानी लताओं से कलम प्राप्त कर ली जाती है। बिजाई हेतु प्रयुक्त की जाने वाली कलम की लंबाई 20 से 30 से.मी. तक होनी चाहिए तथा इसकी मोटाई हाथ के अंगूठे से पतली तथा तर्जनी उंगली से मोटी होना चाहिए। प्रत्येक कलम में कम से कम दो आँख (नोड) होना आवश्यक होता है। प्रायः यह कलमें जंगलों से वृक्षों पर चढ़ी लताओं से प्राप्त की जा सकती है।

**रोपणी में पौधे तैयार करना** – कलमें (कटिंग्स) प्राप्त कर लेने के उपरान्त उन्हें रोपणी में तैयार करने हेतु मिट्टी एवं खाद मिश्रित पॉलीथीन की थैलियों में रोपित कर दिया जाता है। कलमें शीघ्र जड़ पकड़ें इसके लिए रूटिंग हार्मोन्स का उपयोग किया जा सकता है जैसे – रूटेक्स अथवा बी–सेराडिक्स आदि। पॉलीबेग में रोपित की गई इन कलमों में लगभग आठ सप्ताह में जड़ें आना प्रारम्भ हो जाती है तथा इनमें नई पत्तियाँ/कल्ले निकलने लगते हैं। जब यह लगभग दस सप्ताह की हो जाय तो इन्हें मुख्य खेत में रोपित कर दिया जाता है।

**खेत की तैयारी** – गिलोय एक लता है इसलिए इसकी खेती करने से पूर्व आरोहण व्यवस्था का प्रबंध कर लेना चाहिए। कृषक इसकी खेती मेढ़ों (फेंसिंग) पर व ऐसे स्थान जहाँ इसकी लता को बढ़ने के लिए बड़े पेड़ जैसे – नीम, आम आदि पहले से ही लगे हुए हों, कर सकते हैं। इसकी खेती सम्पूर्ण खेत में अंगूर की खेती के समान आरोहण व्यवस्था बनाकर भी की जा सकती है। पंक्ति से